an>

Title: The Minister of External Affairs made a statement regarding the 'Recent Developments in the Republic of Yemen and efforts made for safe evacuation of Indian nationals from there.'

विदेश मंत्री तथा प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज) : माननीय अध्यक्ष जी, "यमन गणराज्य में हाल के घटनाक्रम और वहां से भारतीय नागरिकों को सुरक्षित निकालने के लिए किए गए प्रयास" के संबंध में मैं वक्तव्य देना चाहती हूं।...(व्यवधान)

मुझे इस पुनीत सदन को यह सूचित करते हुए अत्यंत खुशी हो रही है कि युद्धग्रस्त यमन से भारतीय नागरिकों को निकालने के लिए चलाया गया अभियान "राहत" अत्यंत सफल रहा है और इसे अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने खूब सराहा है। ...(व्यवधान) हमने न केवल 4,741 भारतीय नागरिकों को वहां से सुरक्षित निकाला, बल्कि अत्यंत कठिन परिस्थितियों में 18 अप्रैल तक 48 देशों के 1,947 विदेशी नागरिकों को भी सुरक्षित बाहर निकाला। इस निकासी प्रक्रिया के दौरान हम "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना से ओत-प्रोत रहे हैं।

वर्ष 2011 में अरब वसंत आंदोलनों की शुरूआत के उपरांत यमन में भारी उथल-पुथल के बारे में हम सब जानते हैं।...(व्यवधान) उत्तरी यमन से हूथीस के जैदी शिया गुट और राष्ट्रपति अब्दु रब्बो मंसूर हादी के नेतृत्व में संघीय सरकार के बीच गंभीर मतभेद के कारण इस देश में सितंबर 2014 से ही राजनैतिक अनिश्चितता का माहौल बना हुआ है और सुरक्षा व्यवस्था दिनोंदिन बदतर होती जा रही है।

भारत सरकार यमन में आंतरिक घटनाक्रमों पर लगातार नज़र रखे हुए है। यमन में बिगड़ते आंतरिक हालात से न केवल क्षेत्रीय सुरक्षा पर सीधा प्रभाव पड़ा है,...(व्यवधान) अपितु इससे वहां रहने वाले हमारे भारतीय नागरिकों की सुरक्षा एवं कल्याण पर भी असर पड़ा है। सना स्थित हमारे राजदूतावास के अनुमान के अनुसार यमन के विभिन्न क्षेत्रों में 4000 से अधिक भारतीय काम कर रहे थे।

अध्यक्ष जी, यमन में सुरक्षा माहौल के बिगड़ने की संभावना को देखते हुए विदेश मंत्रालय और सना स्थित हमारे राजदूतावास ने इस वर्ष 21 जनवरी को, 19 मार्च को तथा 25 मार्च को तीन परामर्शी जारी करके वहां रहने वाले भारतीय नागरिकों को उपलब्ध वाणिज्यिक साधनों की सहायता से स्वेच्छा से यमन छोड़ने का आग्रह किया था, क्योंकि उस समय सुरक्षित निकला जा सकता था। किंतु तब किसी ने इस सलाह पर ध्यान देते हुए यमन नहीं छोड़ा।

तत्पश्चात स्थानीय सुरक्षा स्थिति का आकलन करने और हमारे राजदूतावास के अधिकारियों और वहां रहने वाले अन्य भारतीय नागरिकों की सुरक्षा हेतु अपेक्षित अतिरिक्त सुरक्षा उपायों के संबंध में सलाह देने के लिए विदेश मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के नेत्त्व में एक अंतर मंत्रालयी दल ने 9 से 13 मार्च को यमन की यात्रा की।

अध्यक्ष महोदया, हमने तत्काल अपेक्षित उपाय किए ताकि हमारे नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। हमने स्थानीय यमनी एजेंसियों तथा क्षेत्र की अन्य सरकारों के साथ संपर्क साधा, ताकि इन लोगों को सुरक्षित एवं समय पर निकाला जा सके। गठबंधन सैन्य बलों द्वारा यमनी हवाई क्षेत्र पर लगाए गए नो फ्लाई जोन तथा समुद्री मार्गों को बाधित किए जाने के कारण निकासी प्रक्रिया अत्यंत जटिल हो गई थी और यह एक बहुत कठिन कार्य बन गया।

मैंने व्यक्तिगत रूप से 27 तथा 29 मार्च को सऊदी अरब के विदेश मंत्री से बातचीत की और इस निकासी प्रक्रिया में सहायता करने का अनुरोध किया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सऊदी अरब नरेश महामहिम सलमान बिन अब्दुलअजीज अलसऊद के साथ 30 मार्च को टेलीफोन पर बातचीत हुई, जिसके दौरान सऊदी नरेश ने उन्हें हर संभव सहायता का आश्वासन दिया।

विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) श्री अनिल वाधवा की अध्यक्षता में "विदेशों से भारतीय नागरिकों की स्वदेश वापसी के लिए स्थायी अंतर-मंत्रालयी समूह" की बैठक 26 मार्च से नियमित आधार पर होती रही, ताकि निकासी योजना बनाने, समन्वयन करने और उसे कार्यान्वित करने का काम किया जा सके। हवाई तथा समुद्री मार्ग से निकासी की योजनाओं को प्रभावी बनाने तथा संशोधित करने के लिए 30 मार्च के बाद से मैंनें स्वयं इस समूह की अनेक बैठकों की अध्यक्षता की।

माननीय अध्यक्ष : आप लोग बात समझिए। मेरी समझ में नहीं आ रहा है क्योंकि बिल तो पेश ही नहीं हुआ है जिसका आप विरोध कर रहे हैं। आर्डिनेंस जरनल-पे में सदन में ले किया गया है। जब बिल इंट्रोडयूज़ होगा, तब आप विरोध कीजिए। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि जब बिल इंट्रोडयूज़ ही नहीं हुआ है, तो आप किस बात का विरोध कर रहे हैं। यह तो आर्डिनेंस है, सभापटल पर रखा गया है। बिल इंट्रोडयूज करते समय आप विरोध कर सकते हैं। आप प्रोसीजर के अनुसार विरोध कर सकते हैं। विरोध करने का यह तरीका ठीक नहीं है। सदन में बहुत महत्वपूर्ण बात हो रही है।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : इसका मतलब है कि आप यमन में भारतीय नागरिकों के साथ नहीं हैं, उनके परिवार के लोगों के साथ नहीं हैं।

â€¦(व्यवधान)

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष जी, हमने यमन में अपने नागरिकों और भारत में उनके परिवार के चिंतित सदस्यों की सहायता के लिए 26 मार्च से विदेश मंत्रालय में चौबीसों घंटे कार्यरत नियंत्रण कक्ष तथा हैल्पलाइनों की स्थापना की। सना में हमारे दूतावास और जिबुती में हमारी नियंत्रण कक्ष में इसी प्रकार चौबीसों घंटे कार्य करने वाली हैल्पलाइन स्थापित की गई।

इन कार्यों की जटिलता को ध्यान में रखते हुए, हमने जिबुती को अपने निकासी प्रयासों का केंद्र बनाया। मेरे सहयोगी राज्यमंत्री जनरल वी.के. सिंह ने स्वयं जिबुती में हमारे शिविर कार्यालय से इन प्रयासों का निरीक्षण किया। जनरल वी.के. सिंह ने इस कठिन कार्य को पूरा करने के लिए बार-बार जिबुती और सना के बीच आना-जाना किया। मैं यहां कहना चाहूंगी कि जनरल वी.के. सिंह ने मंत्री की तरह नहीं बल्कि सेना के पूर्व जनरल की तरह वहां काम किया। इथियोपिया में हमारे राजदूत श्री संजय वर्मा द्वारा जिबुती में बैठकर, उन्हें पूरी सहायता दी गई। हमने अपने निकासी प्रयासों को सुदृढ़ करने और समन्वयन के लिए जिबुती और सना में विदेश मंत्रालय के 26 अधिकारियों की तैनाती की।

इस निकासी के लिए गृह मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, नागर विमानन मंत्रालय और शिपिंग मंत्रालय के साथ सहयोग करके आवश्यक व्यवस्थाएं की गई। हमने 5 समुद्री जहाजों तथा 7 विमानों के माध्यम से निकासी के लिए पर्याप्त क्षमता का उपयोग किया। भारतीय नौसेना के तीन युद्धपोतों - आई.एन.एस. सुमित्रा, आई.एन.एस. मुम्बई और आई.एन.एस. तरकश और दो यात्री समुद्री जहाज जो गृह मंत्रालय ने हमें मुहैया कराए कावाराती और कोरल का उपयोग किया गया। 7 विमानों में से तीन इंडियन एयर फोर्स के सी-17 ग्लोबमास्टर्स और एयर इंडिया के चार व्यावसायिक विमान शामिल थे।

एयर इंडिया के तीन हवाई जहाजों ने भारतीय तथा विदेशी नागरिकों को सना से जिबुती पहुंचाया। ...(व्यवधान) एक एयर इंडिया के ए.आई. 777 का उपयोग भारतीय नागरिकों को कोच्चि तथा मुंबई पहुंचाने में किया गया। ...(व्यवधान) युद्धग्रस्त गुटों के बीच भारी गोलाबारी तथा लड़ाई के बावजूद हमारी नौसेना के जहाजों ने यमन में अदन, अल-हुदायदाह तथा अल-मुकल्ला बंदरगाहों से लोगों को सुरक्षित निकाला। ...(व्यवधान) अदन से जब हमारी नौसेना लोगों को निकाल रही थी, वहाँ घुप्प अंधेरा था, हाथ को हाथ दिखायी नहीं दे रहा था, ऊपर से गोलाबारी हो रही थी, उस समय भी 180 लोगों के स्थान पर साढ़े तीन सौ लोगों को भारतीय नौसेना का जहाज लेकर यमन से निकला। ...(व्यवधान)

हमारे राजदूत श्री अमृत लुगुन की गहन निगरानी में यमन में हमारे दूतावास के अधिकारियों और कर्मचारियों ने हमारी निकासी योजना के संचालन के लिए अत्यंत कठिन परिस्थितियों में रात-दिन

काम किया। ...(व्यवधान) जिबुती में तैनात हमारे अधिकारियों ने भी अथक कार्य किया और इस व्यापक प्रयास का समन्वयन किया। जिबुती में हमारे मानद काउंसेल श्री नलिन कोठारी ने हर संभव स्थानीय सहायता दी। ...(व्यवधान)

हमने यह भी सुनिश्चित किया कि हमारे जिन नागरिकों के पास यात्रा दस्तावेज नहीं थे, उन्हें सना स्थित हमारे दूतावास द्वारा आपात प्रमाणपत्र उपलब्ध कराए जाएं। ...(व्यवधान) हमने यमन में उन सभी भारतीयों को जो घर वापसी के इच्छुक थे, समय से और सुरक्षित निकासी में सहायता करने के लिए हर संभव प्रयास किया। ...(व्यवधान)

हमने यमन से सिर्फ निकासी प्रक्रिया की देखरेख ही नहीं की, बल्कि इससे भी आगे बढ़कर कार्य किया। ...(व्यवधान) भारतीय रेल ने वहाँ से वापस आए लोगों को सम्भाला और उनके घर तक की यात्रा के लिए नःशुल्क कंफर्ड टिकट दिए तथा पूरा अतिथि सत्कार किया। ...(व्यवधान) संबंधित राज्य सरकारें, विशेषकर महाराष्ट्र और केरल में वापस आने वाले सभी व्यक्तियों को भारत में उनके आगमन पर सहायता उपलब्ध कराई। ...(व्यवधान)

मैं महाराष्ट्र सरकार द्वारा किए गए प्रयासों का विशेष तौर पर उल्लेख करना चाहूंगी। ...(व्यवधान) यद्यपि मुंबई पहुंचने वालों में से ज्यादातर लोग अन्य राज्यों के थे तथापि महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें हवाई अड्डे पर सभी सुविधाएं प्रदान करवाई तथा आगे की यात्रा के लिए 3,000 रुपये का नगद अनुदान हर यात्री को दिया। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। ...(व्यवधान) चूंकि भारतीय दूतावास हवाई हमला प्रारंभ होने के बाद सना में कार्यरत कुछेक विदेशी मिशनों में से एक था, इसलिए हमें पड़ोसी तथा पश्चिमी देशों सहित 33 देशों से उनके नागरिकों की निकासी हेतु औपचारिक अनुरोध प्राप्त हुए। ...(व्यवधान) हमने जमीनी सच्चाइयों के आधार पर इन अनुरोधों पर यथासंभव सकारात्मक कार्रवाई करते हुए, कुल मिलाकर हमने 48 देशों के नागरिकों को निकालने में मदद की। ...(व्यवधान)

वे देश हैं- आस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, बहरीन, कनाडा, क्यूबा, जिबुती, मिस्र, एल सेल्वाडोर, इथियोपिया, फ्रांस, ग्रीस, जर्मनी, हंगरी, इण्डोनेशिया, ईरान, इराक, आयरलैण्ड, इटली, जार्डेन, केन्या, किर्गीस्तान, लेबनान, मालदीव, मोरक्को, म्यांमार, मेक्सिको, मॉल्दोवा, नेपाल, न्यूज़ीलैंड, फिलीपीन्स, पाकिस्तान, रोमानिया, रूस, सोमालिया, स्वीडन, श्रीलंका, सूडान, स्पेन, स्विट्जरलैंड, सीरिया, तंजानिया, ब्रिटेन, उज्बेकिस्तान, अमेरिका, यू.ए.ई. युगाण्डा, यूक्रेन तथा यमन के नागरिकों की सहायता की। इसकी विश्वभर में सराहना की गई। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष जी, मैंने जो सूची पढ़ी है, उसमें अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी और रशिया जैसे विकसित देश शामिल हैं, जिन्होंने कहा कि वे नहीं निकाल सकते, भारत के जहाज आएं तो उनमें बैठ जाओ। इस तरह 48 देशों के नागरिकों को हम निकालकर लाए हैं। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष जी, जहां तक निकाले गए भारतीयों का संबंध है, वे 27 राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों के रहने वाले हैं। निकाले गए नागरिकों की राज्यवार संख्या निम्नलिखित है, वह सूची मैंने लगा दी है, सिर्फ इतना बताना चाहूंगी कि निकाले गए लोगों में 53 प्रतिशत लोग अकेले केरल से हैं। हमने कुल 4,741 भारतीय नागरिकों को निकाला है, जिनमें से 2,527 लोग अकेले केरल प्रदेश के हैं। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष जी, 18 अप्रैल, 2015 तक 4,741 भारतीय और 1,947 विदेशियों सहित कुल 6,688 व्यक्तियों को इस कार्रवाई में हवाई तथा समुद्री मार्गों द्वारा निकाला जा चुका है। यह विदेश मंत्रालय की देखरेख और समन्वयन से अनेक भारतीय मंत्रालयों एवं एजेंसियों का संयुक्त प्रयास था। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, सना में सुरक्षा की बदतर होती जा रही स्थिति तथा निकासी प्रक्रिया के सफल समापन के बाद हमने अपना दूतावास 15 अप्रैल को जिबुती में स्थानांतरित कर लिया है। यमन में स्थिति के सामान्य हो जाने तक हमारा दूतावास जिबुती से कार्य करता रहेगा।...(व्यवधान)

अध्यक्ष जी, मैं एक बात कहना चाहूंगी। यह आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत सरकार का सामूहिक प्रयास था। इंडियन नेवी, इंडियन एयरफोर्स, इंडियन रेलवेज़, एयर इंडिया, शिपिंग मिनिस्ट्री और एक्सटर्नल अफेयर्स मिनिस्ट्री ने एक सूत्र में बंधकर काम किया और उसी एकजुटता का परिणाम था कि यह महाभियान इतना सफल रहा। बहुत-बहुत धन्यवाद।...(व्यवधान)

12.21 hrs

MOTION RE: FIFTEENTH REPORT OF

BUSINESS ADVISORY COMMITTEE